लोब सांग राम्पा

यह नाम सुनते ही मैं पुलकित हो जाता हूँ।

मेरे पहले आध्यात्मिक गुरु हैं लोब सांग साम्पा।

29 दिसम्बर 1979 का दिन था। मैं तिरुपति से कर्नूल आते समय मार्ग में अपने सहयोगी श्री राम चेन्ना रेड्डी से मिलने गया। उन्होंने ही मुझे 1976 में सर्वप्रथम ध्यान से परिचित कराया था।

उनके घर में पुस्तकें देखते हुए मैंने दो पुस्तकें पढ़ने के लिए ले लीं। जिनमें से एक थी- You Forever जो राम्पा जी द्वारा लिखित है।

उसे पढ़ कर मैने समग्र आत्मविज्ञान को पा लिया। उसने मेरी ज़िन्दगी में एक नया मोड़ ला दिया। मेरे सभी सन्देह दूर हो गए। एक पल में आध्यात्मिक शास्त्र का आचार्य बन गया हूँ।

अचानक वैकुण्ठ के द्वार खुल गए।

उस समय से मेरे आध्यात्मिक जीवन का यान शुरू हो गया और मैं आध्यात्मिक शास्त्र का विस्तृत प्रचार भी करने लगा।

यह यान हमेशा चलता रहता है।

हमेशा-युगों तक चलता ही रहेगा।